E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

बाल मानसिकता के निर्माण में पुस्तक संस्कृति की रचनात्मक भूमिका एवं योगदान

भारती बॉदिल
शोधार्थी

डॉ. श्रद्धा सक्सेना
शोध निर्देशिका
प्राध्यापक, हिंदी
महारानी लक्ष्मीबाई कला एवं वाणिज्य
स्वशासी महाविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

Paper Received date
05/05/2026
Publishing Date
10/05/2026
DOI
https://doi.org/10.5281/zenodo.21259318

IMPACT FACTOR 5.924

पुस्तकें सभी के जीवन में एक अच्छा मार्गदर्शक बन कर अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है, बालक भी पुस्तक की दुनिया से बचपन से ही परिचित हो जाते है। ये बालकों की स्मृति और बुद्धिमत्ता को बढ़ाती है, उन्हें पढ़ने, लिखने, बोलने आदि के कौशल सिखलाती है एवं बाहरी दुनिया का ज्ञान भी प्रदान करती है। पुस्तकें बाल मानसिकता के निर्माण में केवल ज्ञान का स्रोत नहीं होती, बल्कि जीवन को नई दिशा देने वाली मार्गदर्शक होती हैं। एक अच्छी पुस्तक बालक के विचारों को परिष्कृत करती है, कल्पनाओं को विस्तार देती है और बालकों को जीवन के गूढ़ सत्य से परिचित कराती हैं। यह बालक को एक बेहतर इंसान बनने की प्रेरणा देती है। ये बालजीवन की सबसे अच्छी दोस्त है प्राचीन समय से इसका महत्व समझाया जाता रहा है। इनको पढ़ने से बालकों का नजरिया सारी दुनिया के प्रति अलग–थलग ही रहता है।

पढ़ना दिमाग के लिए वैसा ही है, जैसा व्यायाम शरीर के लिए होता है। यह अक्षरतः सत्य है कि बिना शिक्षा के मानव जीवन एक पशु मात्र है किताबें ही मानव को शिशुवस्था से प्रौढ़ अवस्था तक मनुष्य बनाती है उनका ज्ञानवर्धन करती हैं।

पाश्चात्य विद्वान **अब्राहम लिंकन** कहते है– ''किताबे आदमी को ये बताने के काम आती है कि उसके मूल विचार आखिरकार इतने नये भी नहीं हैं।''

डॉ. राधाकृष्ण– ''पुस्तकें वो माध्यम हैं, जिनके द्वारा हम विभिन्न संस्कृतियों के बीच सेतु बना सकते हैं।''

निर्मल वर्मा के अनुसार– ''किताबे मन का शोक, दिल का डर या अभाव की हूक कम नही करती, सिर्फ सबकी आँख बचाकर चुपके से दुखते सिर के नीचे सिराहना रख देती है।''

पुस्तक सदैव हमारे आदर्श मार्गदर्शक या सर्वकालिक शिक्षक के रूप में हमारे जीवन में शामिल रही हैं। हम लोगों में कई लोगों को अपने खाली समय में एवं सोने से पहले किताबें पढ़ने की आदत होती है। पढ़ने से बालक को अवांछित तनाव पर काबू पाने में मदद मिलती है।

किसी ने ठीक कहा है– ''किताबें करती है बातें.....खुशियों की गमों की.....किताबें कुछ कहना चाहती है, तुम्हारे पास रहना चाहती है।''

पढ़ना मानवीय क्रिया कलाप का एक महत्वपूर्ण अंग है। सामूहिक और व्यक्तित्व चेतना को गढ़ने में पढ़ने की संस्कृति महत्वपूर्ण होती है। प्राचीन काल से आधुनिक काल इस बात का गवाह है कि पढ़ने की संस्कृति ने सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन किए है।

रामायण और महाभारत संस्कृत भाषा के ऐसे महान ग्रंथ रहे है, जिन पर भारत की बहुत बड़ी साहित्यिक सम्पदा आश्रित है। सामान्य भारतीय बालक की मानसिकता पर रामायण, महाभारत का व्यापक प्रभाव प्रभाव पड़ता है।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

भारतीय समाज के किसी भी विषय को यदि बालक पढ़ता है, तो पाता है कि प्राचीन ग्रंथों के बिना समाज का अनुशीलन करना कठिन है। दोनों ग्रंथों ने अनेक नाटककारों को कथानक दिए है इसलिए इन दोनों ग्रंथों को उपजीव्य काव्य कहा जाता है।

बाल मानसिकता पर रामायण का सांस्कृतिक महत्व बहुत है। इसलिए इस ग्रंथ से संबंधित अनेक कथाओं पर हिंदी भाषा में पुस्तकों का सृजन हुआ। बालकों को अनेक प्रेरक–प्रसंग, छोटी–छोटी कहानियों, नाटकों के माध्यम से उपलब्ध करायी जाती रही है। इस विश्वकोष में मूल्यवर्धन व ज्ञानवर्धक जानकारी प्रचुर तादाद में है जो बालमन को संस्कार देने में फलीभूत है।

पुस्तक के पठन–पाठन से बालक अनुकरण करना, आदर्श स्थापित करना, ईर्ष्या से दूर रहना और घर के भाई–बहनों को कहानी, खेल, गीत जैसा वातावरण देने में अपनी सफल भूमिका अदा करते हैं। पुस्तकें बालमन की सोचने की क्षमता को विकसित करती है। पुस्तक को पढ़ते समय बालक एक नई सोच व नई दुनिया में प्रवेश करता है। इसी को **डॉ. रामसहाय बरैया** जी ने दृष्टव्य किया है, वे काव्य पंक्तियों में बालक को समय का सद्उपयोग की सोच विकसित करते हुए कहते है–

गया समय आवे नहीं
मन में करो विचार।
रम्य स्वप्न पूरे करो,
परिहर सभी विकार।
× × ×
ले संयम की ढाल
कर्म कुछ करो निरंतर।
कहत 'बरैया राय,
बनाओ नई मिसालें।
अनुशासन से चलो,
लक्ष्य खुद गले लगा ले।

एक अन्य काव्य पंक्तियों में **डॉ. बरैया** समझाते है–

सुख के पीछे जो फिरें
करें न कोई काम
ऐसे नर को जगत में
मिले नहीं सुख धाम
× × ×
कहत बरैया राय
राह से हट जाता दुख
कर्मवीर जो बने,
वही नर पाता है सुख।

डॉ. बरैया जी ने बालमन को कर्मवीर बनने की प्रेरणा दी है। बालजीवन बिन अनुभव का होता है। पुस्तकों का सृजन करते समय कवि इन पुस्तकों के पाठों का मूल उद्देश्य भी बालकों को या पाठकों को पहुँचाने की कोशिश करता है। इससे जीवन के विभिन्न पहलुओं को समझने में बालमन को मदद मिलती है।

पुस्तकें ज्ञान का भंडार है, सूचना का केन्द्र है। **डॉ. बरैया** ने बाल मानसिकता को मजबूत बनाए रखने के लिए देश की एकता अखण्डता पर कुछ पंक्तियाँ बालमन को दृष्टव्य की है–

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

देश की एकता
और अखण्डता हेतु
हृदय में,
सद्भावना का बीज
बोएं।
तथा मतभेद के मेल
को
प्रेम के साबुन से
धोऐं।

कुंडलियों पुस्तक में **डॉ. बरैया** बालकों को मुहावरों से परिचित करवाते है–

करो भरोसा स्वयं पर, आलस को दो छोड़
कर्म करो हरि नाम ले, दुख लेगा मुंह मोड़
दुख लेगा मुंह मोड़, भाग्य चलकर आयेगा
क्या आज्ञा श्रीमान कहो! वह सब लायेगा
कहत बरैया राय निराशां अब दूर धरो
वैज्ञानिक समय है, दिल खोल के काम करो।

उपर्युक्त कुंडली छंद को पढ़कर बालक की रचनात्मक गतिविधियॉ सोचने–समझने की क्षमता बढ़ाती हैं। वह बालक की चिंतन प्रक्रिया को उत्तेजित करती हैं और उसकी जीवन शैली में भी बदलाव लाती हैं।

विविध विधाओं की पुस्तकें पढ़ने से बालकों को आलोचनात्मक रूप से सोचने और विश्लेषण करने में मदद मिलती हैं। इससे बालक को दुनिया के बारें में बहुत सी जानकारिया मिलती हैं। पुस्तक पढ़ते समय बालमन व किशोरमन दुनिया को लेखक की नजर से देखते हैं। कई आत्मकथाएं और जीवनियों की पुस्तक बालक को मानव संस्कृति और जीवनशैली के बारें में बहुत कुछ सिखाती हैं। यह बालक के प्रतियोगी जीवन की साथी नही होती, बल्कि यह जीवन के प्रत्येक पड़ाव पर बालक का मार्गदर्शन करती है। बालक समय के प्रति सजग रहने की चेतना भी माता–पिता से कही ज्यादा पुस्तकों से सीखते हैं।

माया वर्मा ने भी अपनी पुस्तक 'समय की आवाज' नामक शीर्षक से बालकों की मानसिकता को मजबूत करती दृष्टव्य है–

गीत एक हो सबका, चाहे अलग–अलग हो साज।
समय की है यह आवाज।।
यद्यपि किरणें हैं असंख्य पर।
सूर्य एक है धरती का।।
यद्यपि प्राणी हैं असंख्य पर
ईश्वर एक अखिल जगती का।।
हम अनेक, पर सृजन लक्ष्य हो एक सभी का आज
समय की है यह आवाज।।

उपर्युक्त कविता के माध्यम से **माया वर्मा** ने बालमन को ईश्वरीय सत्ता का विश्लेषण का महत्व बतलाया है।

किताबें पढ़ना सभी बालकों को पसंद है। सभी बालक अपनी–अपनी पसंद की पुस्तकें पढ़ना पसंद करते है। कई बालक इतने शौकीन भी होते है कि अपने घर में ही छोटी सी लाइब्रेरी बना लेते है। वास्तव में पुस्तकें बालजीवन की आदर्श साथी होती हैं। वे रचनात्मक कला रूपों में से एक है।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

किसी भी बालक, परिवार, समाज और राष्ट्र का उत्थान उनकी नैतिक शक्ति और ज्ञान के विकास से ही होता है। इसके विपरीत नैतिक पतन ही पराभव तथा पतन का मुख्य कारण है। पुस्तक बालमन को हृदय से रचनात्मक अर्थात् सक्रिय बनाता है। वह चाहे या न चाहे मगर पुस्तक के अंदर लिखे गए विचार जब बालमन में आत्मसात हो जाते है, तो बालमन की मानसिकता से उसकी अमिट छाप छुड़ाए नही छूटती।

डॉ. परशुराम शुक्ल भी अपनी पुस्तक बालवंदन में बच्चों की वंदना करते हुए समझाते है, कि बालमन सच्चाई से भरे हुए होते है, वे फूलों के नव बौर होते है, वे देवताओं के समान होते है, पल में रूठने वाले व पल में मानने वाले होते है सीधी साधी बातें मानने वाले होते है। मीठी–मीठी बातें करने वाले होते है। वे काव्य के माध्यम से कहते है–

''हे! बालमन, हे! विश्वरूप,
तुमको मेरा शत्–शत् प्रणाम।
सच्चाई के तुम ज्योति पुंज,
सुरभित सुमनों के नव निकुंज,
मानवता गर्व करे तुम पर,
तुम देव तुल्य नयनाभिराम।
तुमको मेरा शत–शत प्रणाम।।

उपर्युक्त दोहे की पुस्तक को पढ़कर बालक स्वयं अपने अंदर छिपे मानवता के अंकुरण को जान सकता है, समझ सकता है उस पर अमल कर सकता है।

एक अन्य पुस्तक में कवि ने बालमन को समझाया है कि अन्याय–अत्याचार से आया धन किसी को सुख नहीं दे सकता है पंक्तियॉ दृष्टव्य है–

जो अशक्त वह कैसा तन है? जो मैला वह कैसा मन है?
करे पाप औ भरे तिजोरी, उसका धन भी कोई धन है?

आगे वे कहते है–

''बूंद–बूंद से गागर भरती, अक्षर–अक्षर ज्ञान।
इक–इक पैसा जोड़कर, निर्धन बने धनवान।।
माता–पिता और गुरु का, करो सदा सम्मान।
इनके आशीर्वचन से, ही सम्भव कल्यान।।

पुस्तकें बालकों को आदर्श जीवन जीने की उमंग पैदा करती है। वे अपने महापुरुषों के बताए रास्ते पर बालकों को चलना सिखाती हैं। बालक भी ऐसी पुस्तकें पढ़कर त्याग, तपस्या, दया, धर्म अपनाकर सचरित्र का निर्माण कर सकते है, और भावी राष्ट्र निर्माता की अहम भूमिका अदा कर सकते है।

ये गुण बालकों को घर में रहने वाले भगवान अर्थात् माता–पिता तथा गुरुकुल में रहने वाले सारथी अर्थात् गुरु जी के आशीर्वचन से स्वतः ही प्राप्त हो जाते है। चूंकि वर्तमान में संचार क्रांति का जोर शोर होने के कारण समस्त बालकों का मन संकट कालीन समय से गुजर रहा है। ऐसे में ये पुस्तकों की संस्कृति ही बालमन को संरक्षित करती रहती है।

शुक्ल जी की कविता भी कुछ बालमन के मूल्यों को पकड़े रहने की ओर दृष्टव्य है–

''सत्य अहिंसा और अपरिग्रह को अपना तुम मित्र बनाओ।
त्याग, तपस्या, दया, धर्म से, अपना दिव्य चरित्र बनाओ।
घोर परिश्रम और योग से, फौलादी निज बदन बनाओ।
आ जाए गिरिराज सामने, तो उससे भी टकरा जाओ।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

पुस्तक लिखने की संस्कृति जिसमें साहित्यकार एक–एक शब्द सोच समझ कर गठन करते है। खासतौर पर बाल साहित्यकार की लेखनी, जो वह बड़ी सूझ–बूझ से चलाता है। तभी बाल मानसिकता को गढ़ पाता है और नन्हें बालक की मानसिकता को सुदृढ़ कर पाता है।

इसके विपरीत विगत कुछ दशकों से बालमूल्य निरंतर गिरते जा रहे हैं। बालक पुस्तकों से इतर अपना मन संचार के साधन में लगाकर अपना शरीर व अपना समय दोनों अंधकार में डाल रहा होता है। युवा होने पर बालक को रोजगार न मिलने से वे अवसाद में जाने लगते है।

यदि पुस्तक नहीं होती तो बालमन अपनी संस्कृति और इतिहास दर्शन के बारें में बहुत कम जान पाते। उन्हें अपने अतीत व महान विचारकों के लेख पढ़ने का मौका नही मिलता न ही प्रेरणा मिलती। वे अपने भविष्य के बेहतर निर्णय लेने में सक्षम नहीं होते। यदि बालमन पुस्तकें नहीं पड़तें तो वह आत्मकथाओं व प्रेरक प्रसंगों को पढ़ने का मौका नही ढूढ़ पाते। पुस्तकें ही भारतीय संस्कृति को आकार देने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वे बालमन को नई–नई भाषा सीखने में मददगार सिद्ध होती है।

बालक के जन्म के समय उसका मस्तिष्क कोरा कागज समान होता है। उसे जिस धारा में मोड़े वह उसी धारा प्रवाह में बहेगा। कुछ आयु अंतर के बाद बालक किशोर होने लगता है ये समय बालमन के सृजन का भी हो सकता है। जो कि पुस्तक, संस्कृति से ही संभव है ऐसे समय में बालमन नवीन सृजन, नवीन विचार गठन, स्थिरता, एकाग्रता, दूरदृष्टि एवं जीवन के विविध क्षेत्रों में नए सिरे से पुनर्निधारण को संपन्न कर सकते है। वे जीवन के विभिन्न लक्ष्यों तथा कैरियर, व्यवसाय, आपसी संबंध, स्वास्थ्य, धन आदि पर कुछ समय खर्च कर उस पर पुनर्विचार कर सकते है। नई योजना के साथ आगे बढ़ सकते है। वस्तुतः ये बालमन के नवनिर्माण के पल होते हैं। ये बालमन को नई स्पष्टता एवं अंतर्दृष्टि देने वाले क्षण होते है; ये बालकों के जीवन की गुणवत्ता बढ़ाने का सही समय होता है। इस तरह पुस्तक बालकों की आत्मा में नई ताजगी व ऊर्जा को भरने वाली होती है। पुस्तक बालकों को स्वयं से ऊपर उठाने के सुअवसर भी देती है। जीवन को वर्तमान में जीने की कला, बालक इन्हीं पुस्तकों को पढ़कर सीखते हैं।

पुस्तक बालमन को हर पल नई संभावनाओं, नए सृजन एवं नई ताजगी के साथ जीने की आदत सिखाती है। इससे बालकों के आपसी संबंध सुदृढ़ होते है। वे सही गलत के निर्णय लेने में सक्षम होते है। पुस्तकें पढ़ने की आदत बालमन को सत्संग, भजन–कीर्तन, प्रार्थना आदि के साथ स्वाध्याय करने एवं गहन आत्ममंथन करने में सिद्ध हस्त साबित होती है।

बालक का जीवन जब भी दैनंदिनी चक्रव्यूह में उलझकर बोझिल होने लगता है, तो इन एकांतिक पलों में विश्राम के साथ–साथ बालक पुस्तकों को अपना अहम मित्र बनाकर अपने भविष्य को भी सुरक्षित कर सकते हैं। पुस्तकों में छिपे इस भविष्य को अर्थात् ज्ञान को कोई चोर भी नहीं चुरा सकता। वह दिनोंदिन बढ़ता ही जाता है तथा धीरे–धीरे ये ज्ञान बालजीवन में 'गागर में सागर' भरने का काम करता हैं। बालक दिन के अंत में, मासांत में, सत्रांत में पुस्तक साधना कर सकते है।

डॉ. राम सहाय बरैया ने साधना–दीप नामक कविता में पुस्तक महत्व को समझाया है–

''जला साधना–दीप जगत में,
नव प्रकाश फैलाओ।
दृढ़ विश्वास गगन की लहरें,
पुलक पुलक कर नाचें।
गौरवमयी संस्कृति की गीता,
अधर अहर्निश वांचे।
अपने सुरमित सच्चरित्र से
सारा जग महकाओ

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

तुम राणा सांगा प्रताप हो,
वीर शिवा नाना जी।
मोड़ दिए मुंह विपदाओं के
जीती हारी बाजी।
त्याग तपस्या आत्मशक्ति से,
दिगदिंगत यश पाओ।

पुस्तक भाषा संस्कृति का आधार है, भाषा संरक्षण में पुस्तकें महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भाषा सीखने को प्रोत्साहित करती हैं और विविध विरासतों को सुदृढ़ करने में अहम् भूमिका निभाती है।

पुस्तकों की संस्कृति परम्पराओं, पठन–पाठन, इतिहास, मान्यताओं और मूल्यों को समृद्ध करने का ताना–बाना है। परंतु वर्तमान समय में **तुलसीदास** जी की तरह 'स्वांत सुखाय रघुनाथ गाथाए' रचने, पढ़ने एवं सुनने सुनाने वाले बाल, किशोर, युवा न के बराबर है।

अतः पढ़ना बालकों की चाहत नही रहा है, अपितु पढ़ना परीक्षा, उत्तीर्ण करने वाला ही है। तथाकथित विद्वान भी अपने भाषण को लच्छेदार बनाने मात्र के लिए पढ़ते है समग्र रूप से साहित्य अध्ययन करने वाले बालकों की संख्या में बहुत भारी गिरावट आई है।

''समाचार, लेख, ब्लॉग–पोस्ट, फेसबुक अनेक तरह के पढ़ने के आयाम है। पढ़ने के पारम्परिक ढंग को धकिया कर बर्चुअल रीडिंग ने ले ली है। लेकिन ये तकनीकें किताबों के महत्व को कभी खत्म नहीं कर सकती हैं। जब बालक पढ़ते हैं तो कई नई–नई जानकारियॉ निकल कर सामने आती है। इन जानकारियों का कई बालक गहन अध्ययन करते है। इससे बालकों में पढ़ने और खोजने की क्षमता बढ़ती है प्रौद्योगिकी को विद्युत शक्ति की आवश्यकता होती है। इसके पलट पुस्तकों को केवल खोलने और पढ़ने मात्र की आवश्यकता होती है।

इंटरनेट को डाटा व ऊर्जा दोनों की आवश्यकता होती हैं। पुस्तकें पढ़ने से ही बालक के मन में नए विचार बनते हैं इन विचारों के फलस्वरूप ही बालक जीवन के निर्णय लेना सीख जाते है। बालक के विकास में मूल बिंदु ही विचार होते है, जो यदि अच्छे होंगे तो बाल जीवन तरक्की कर सकेगा। यदि खराब होंगे तो बालक अवनति की ओर जाएगा। वह जीवन पथ से भटक कर जीवन नष्ट करने को भी आतुर हो सकता है। हमारे बच्चे कब तक आत्मघाती विचारों से अपने को बचा पायेंगे? क्या कोई ऐसा रक्षा कवच नहीं है जो उन्हें इस पतन से बचा सके? इसका एक ही समाधान है कि सत्साहित्य की पुस्तक बालक के हाथों में आती रहेंगी तो बालक देरी से ही सही परंतु परम शांति व आनंद का अनुभव करने लगेगा।

संदर्भ–सूची

1. दृष्टि आई.ए.एस. ब्लॉग 28 अप्रैल 2023
2. दृष्टि आई.ए.एस. ब्लॉग 28 अप्रैल 2023
3. दृष्टि आई.ए.एस. ब्लॉग 28 अप्रैल 2023
4. दृष्टि आई.ए.एस. ब्लॉग 28 अप्रैल 2023
5. डॉ. रामसहाय बरैया, जीवन बाग लगाओ, पृष्ठ–16
6. डॉ. रामसहाय बरैया, जीवन बाग लगाओ, पृष्ठ–17
7. डॉ. रामसहाय बरैया, उगता सूरज, पृष्ठ–16
8. डॉ. रामसहाय बरैया, गुलमोहर, पृष्ठ–47
9. मार्या वर्मा, प्यारी गुड़िया, पृष्ठ–21
10. परशुराम शुक्ल, बालवंदन, पृष्ठ–1

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

11. परशुराम शुक्ल, बालवंदन, पृष्ठ–11
12. परशुराम शुक्ल, बालवंदन, पृष्ठ–14
13. डॉ. रामसहाय बरैया, जीवन बाग लगाओ, पृष्ठ–12